R.N.I. NO: MAH MUL/2011/40056

LOOK N LEARN

Vol No. 12 • Issue No. 06 • Mumbai • 25th April 2021 • Price : Rs 5/- (Multilingual Fortnightly)

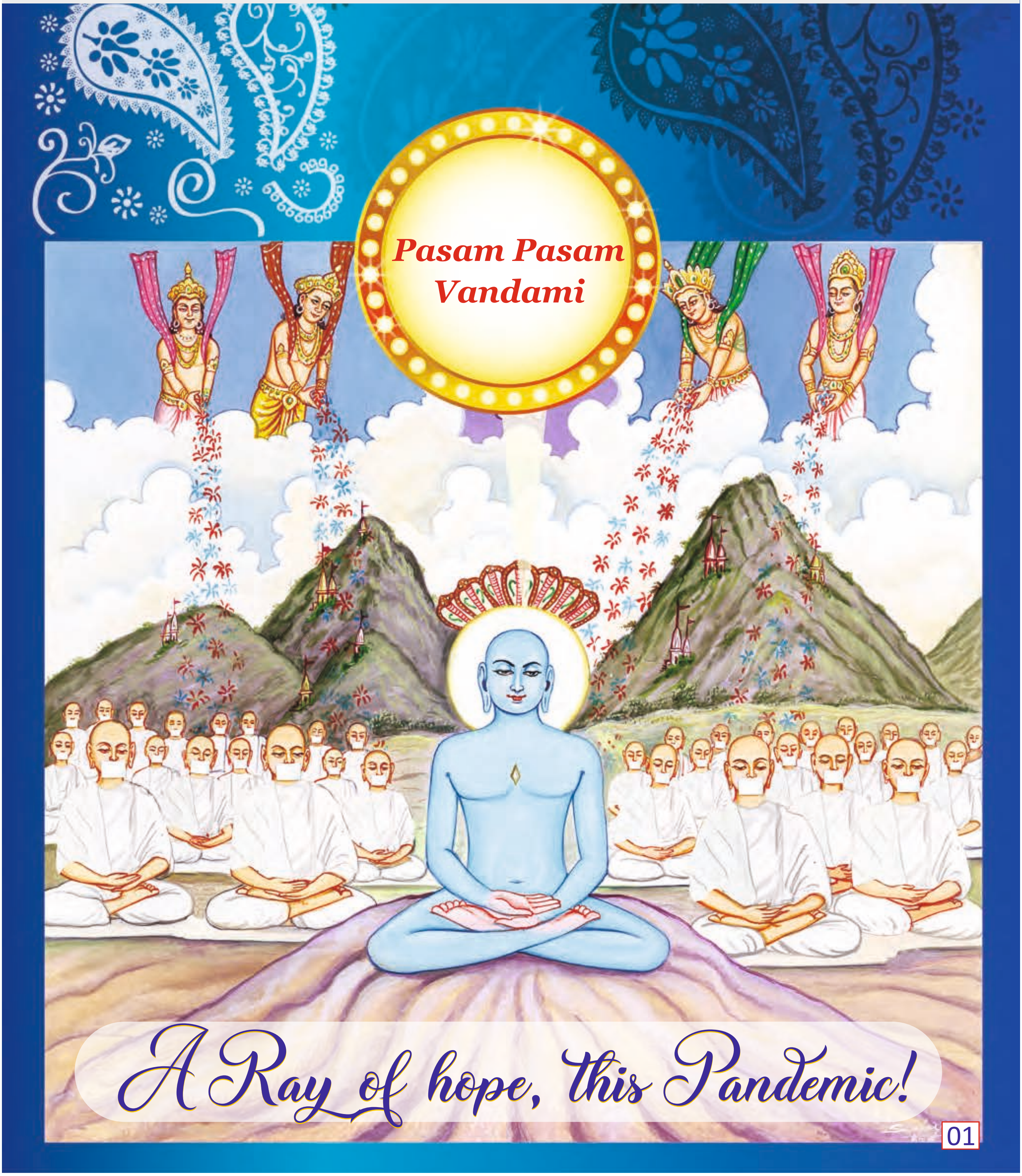

Cheque or Draft:
Arham Yuva Group

Parasdham
Vallabh Baug Lane, Tilak Road,
Ghatkopar (E), Mumbai - 77

Subscription for 10 years
India : Rs. 1000/-
Abroad : Rs. 5000/-

श्री उवसग्गहरं स्तोत्र की रचना

भद्रबाहु और वराहमिहिर दो भाई थे। वे शिक्षा ग्रहण करने जैन साधु के पास जाते थे।

उनके हृदय में जैन धर्म के प्रति अहोभाव जागृत होता हैं और वे जैनाचार्य के पास दिक्षा अंगीकार करते हैं। गुरु शिष्यो की योग्यता देख उन्हें शास्त्रो का ज्ञान देते हैं।

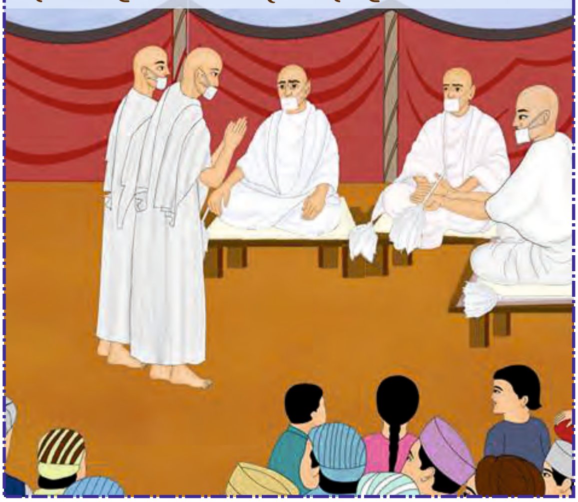

अविनयी वराहमिहिर शास्त्र अभ्यास में शंका करते हैं।

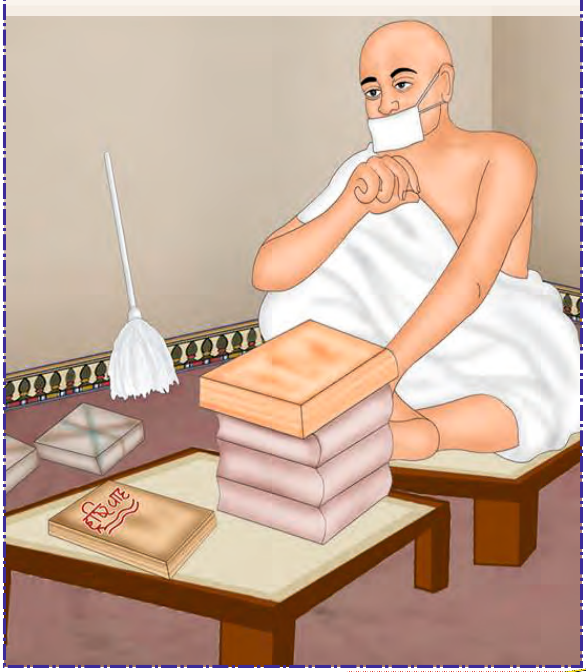

बच्चों विनय\ respect के साथ स्वाध्याय करने से हमें १००% परिणाम मिलता हैं।

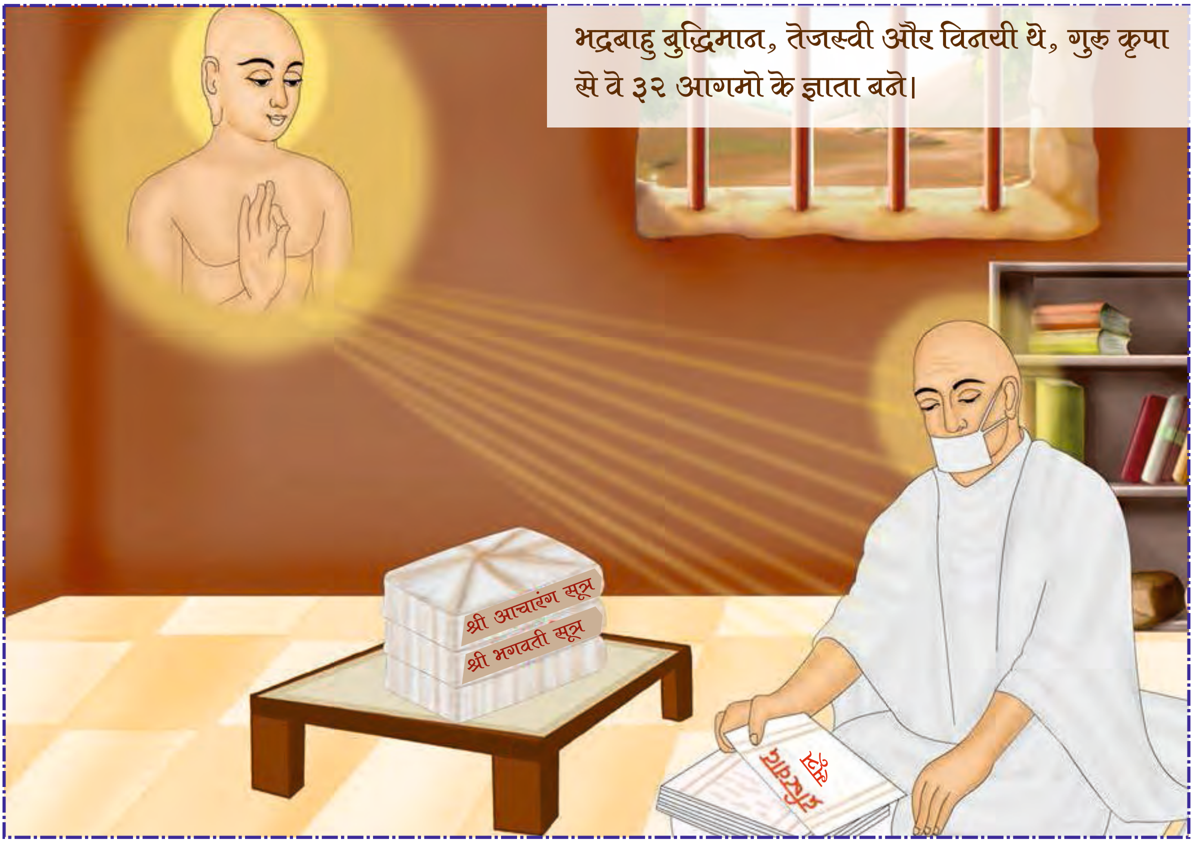

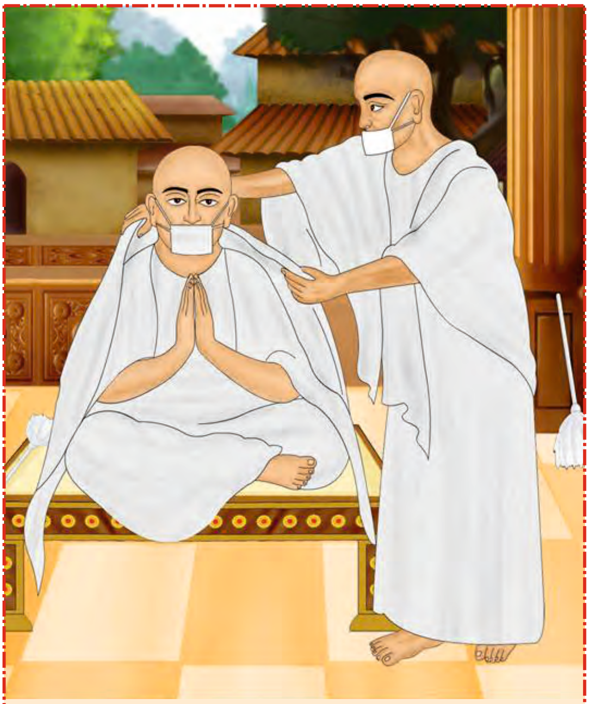

समय बितता चला गया। गुरुदेव भद्रभाहु स्वामी को आचार्य पद का स्थान देते हैं।

इस बात से वराहमिहिर अत्यधिक क्रोधित हुए और उन्हें बहोत गुस्सा आया। उन्होंने ईर्ष्यावश गुरुदेव के सामने रजोहरण और मुहपत्ति फेंक दी और वे गाँव छोड़कर चले जाते हैं।

जहाँ विनय होता है वहाँ तुलना नहीं होती,
जहाँ विनय होता हैं वहाँ सिर्फ स्वीकार होता हैं।

वराहमिहिर के पास ज्योतिष शास्त्र का अच्छा ज्ञान था। जिससे वे किसी नगर में ज्योतिषी बनकर जीवन निर्वाह करने लगे। धीरे धीरे उनकी ख्याति बढ़ने लगती है, उनका नाम राजा तक पहुँचता है और वे राज ज्योतिषी का पद पाते हैं।

दूसरी ओर विहार करते-करते आचार्य भद्रबाहु स्वामी उसी नगर में आते हैं जहाँ वराहमिहिर उपस्थित थे

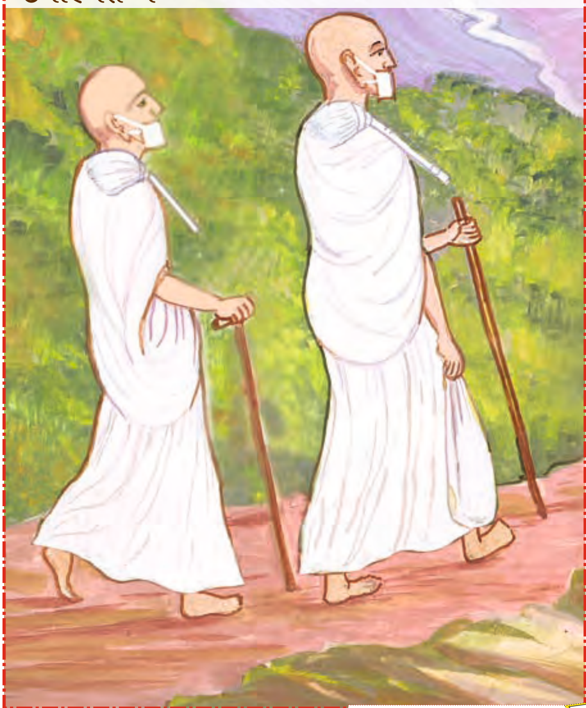

एक दिन उसी नगर के राजा के यहाँ बरसो बाद पुत्र का जन्म होता है।

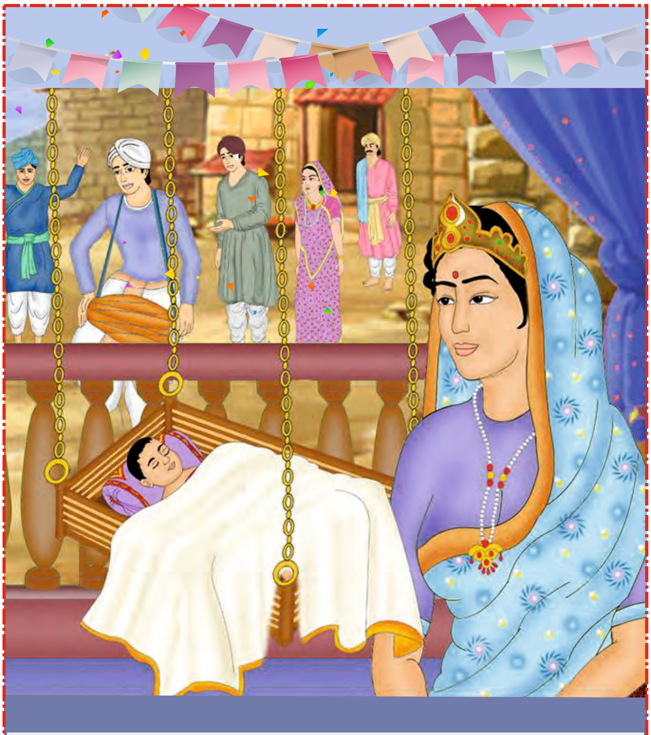

पुत्र जन्म के समाचार पाते ही पूरी नगरी में हर्षोल्लास छा गया।

अनेक नगरवासी, श्रेष्ठिजन और पंडित राजा को बधाई और राजकुँवर को आशीर्वाद देने राज दरबार जाते है। लेकिन केवल आचार्य भद्रबाहु स्वामी नहीं गए।

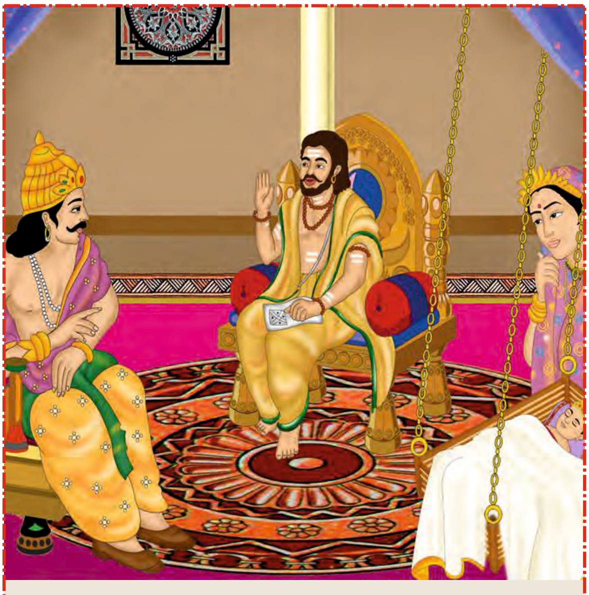

राज ज्योतिष वराहमिहिर ने भी नव जात शिशु को आशीष देते हुए उनकी जन्म कुंडली बनाइ और अपनी विद्या से उनका आयुष्य लंबा बताया।

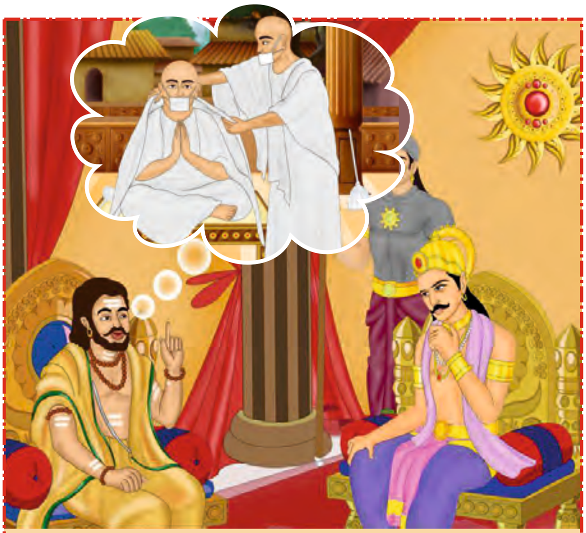

वरामिहिर को अपना पूराना अपमान याद आता है और वे राजा के कान भरते है कि... हे राजन... आपके घर आंगन इतना अच्छा प्रसंग आया, अनेक धर्मगुरु आशीर्वाद देने पधारे किंतु भद्रबाहु आपको बधाई तक देने नहीं आये, और ना ही आँएगे।

कभी किसी के कान न भरें, किसी के बारें में बुरा न बोले, किसी की निंदा न करें। निंदा करना यह पापस्थानक हैं और इससे अशुभ कर्मों का बंध होता है।

राजा तुरंत ही अपने मंत्री को भद्रबाहु स्वामी के पास भेजते है और उन्हें राजमहल आकर राजकुँवर को आशीष देने की विनंती करते हैं।

भद्रबाहु स्वामी मंत्री से कहेते है... जिसका आयुष्य लंबा हो उसे आशीष दिया जाता है, किंतु जिनकी ७ ही दिन में मृत्यु है, उन्हें कैसे आशीर्वाद दिया जा सकता हैं?

मंत्री ने तुरंत जाकर राजा को आचार्य का जवाब सुनाया। राजा को यह सूनते ही आघात लगता हैं। वे तुरंत ही भद्रबाहु स्वामी के पास जाते हैं और मृत्यु का कारण पूछते हैं।

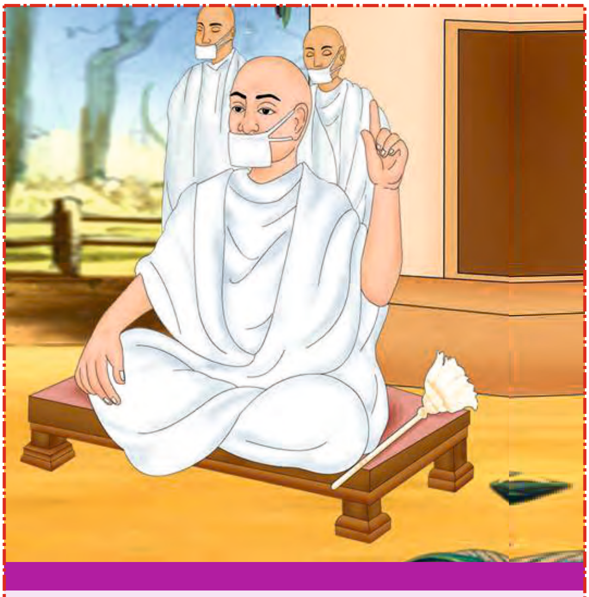

आचार्य कहते हैं की पहले आप अभयदान का वचन दे फिर ही वे कारण बताऐंगे। राजा के अभयदान देने पर आचार्य राजकुमार की मृत्यु का कारण बिल्ली बताते हैं।

राजा सोच में पड़ जाते है कि बिल्ली का क्या किया जाए?

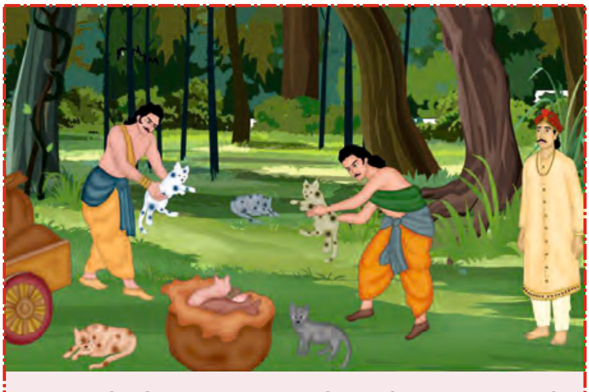

दूसरे ही दिन राजा के सिपाहीयों ने अपनी नगरी से सारी बिल्लीयों को पकड़ पकड़कर किल्ले से बाहर किया।

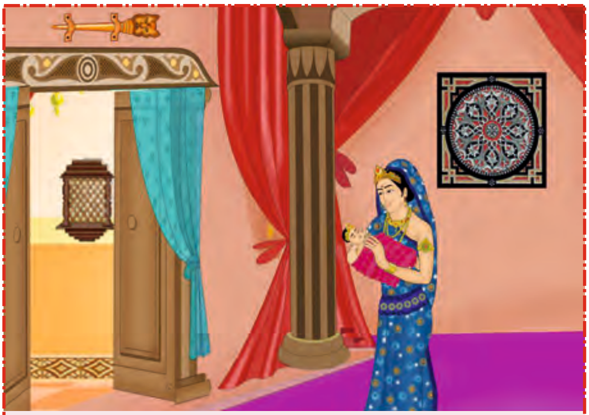

लेकिन जब सातवें दिन की सुबह रानी राजकुमार को गोद में लिये जाती है तभी...

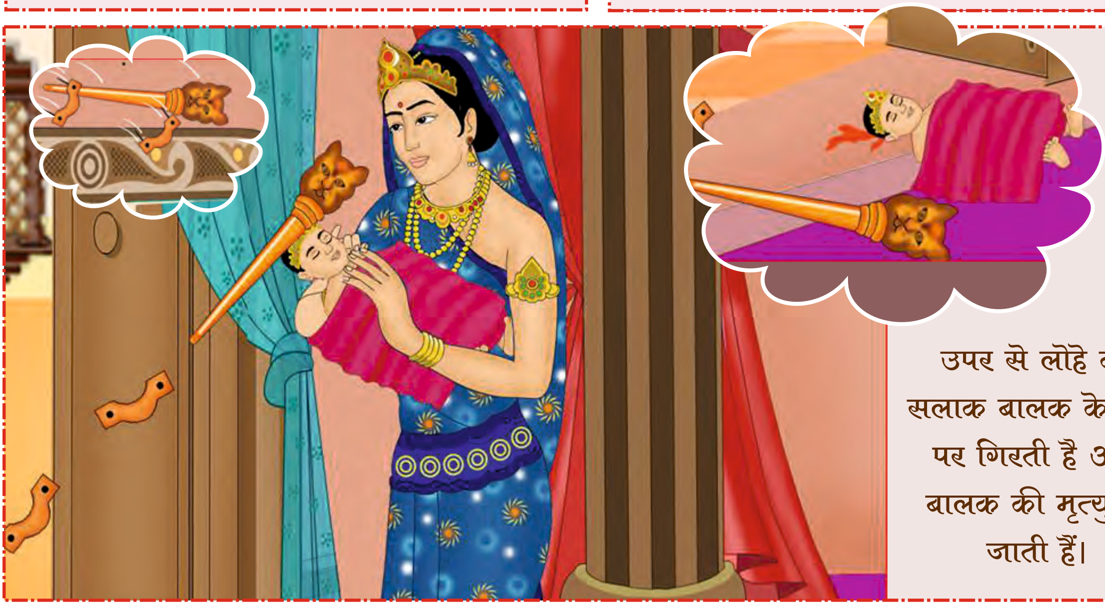

उपर से लोहे की सलाक बालक के सीर पर गिरती है और बालक की मृत्यु हो जाती हैं।

राजा और पूरा परिवार शोक से व्याकुल हो गया।

वराहमिहिर का ज्योतिष गलत साबित हुआ और जैनाचार्य की बात सच हुई, लेकिन बिल्ली से मृत्यु होगी यह बात सच साबित नहीं हुई।

इस बात का समाधान लेने के लिए राजा आचार्य के पास जातें हैं। आचार्य राजा के मन को समाधान मिले इस हेतु से महल पधारते हैं।

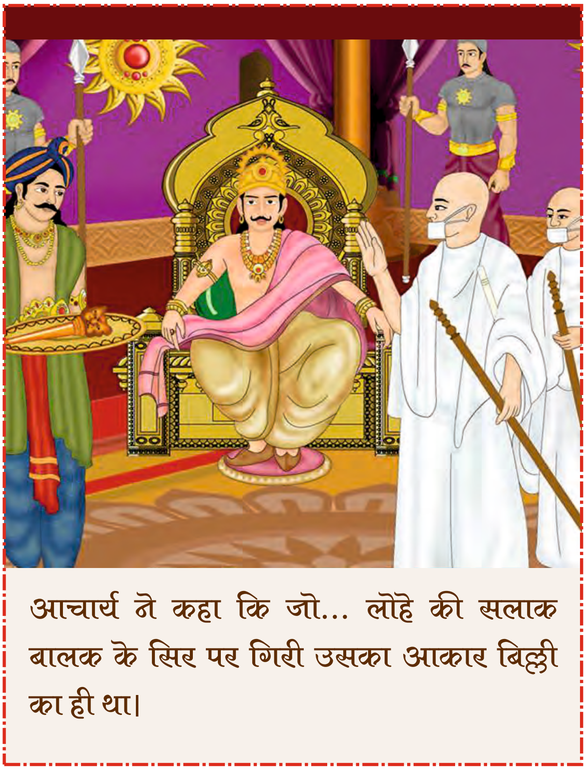
आचार्य ने कहा कि जो... लोहे की सलाक बालक के सिर पर गिरी उसका आकार बिल्ली का ही था।

राजा जाकर आचार्य के पास माफी माँगते हैं।

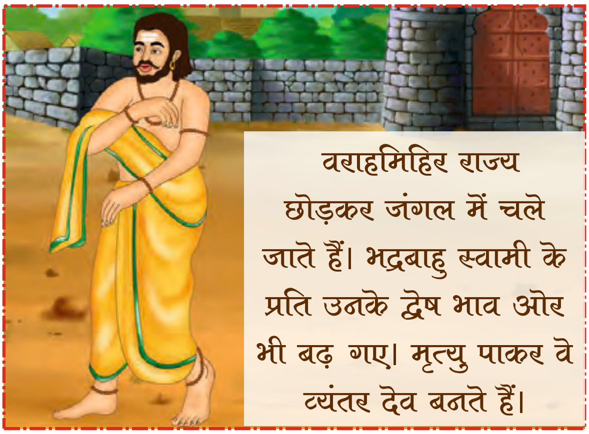
वराहमिहिर राज्य छोड़कर जंगल में चले जाते हैं। भद्रबाहु स्वामी के प्रति उनके द्वेष भाव और भी बढ़ गए। मृत्यु पाकर वे व्यंतर देव बनते हैं।

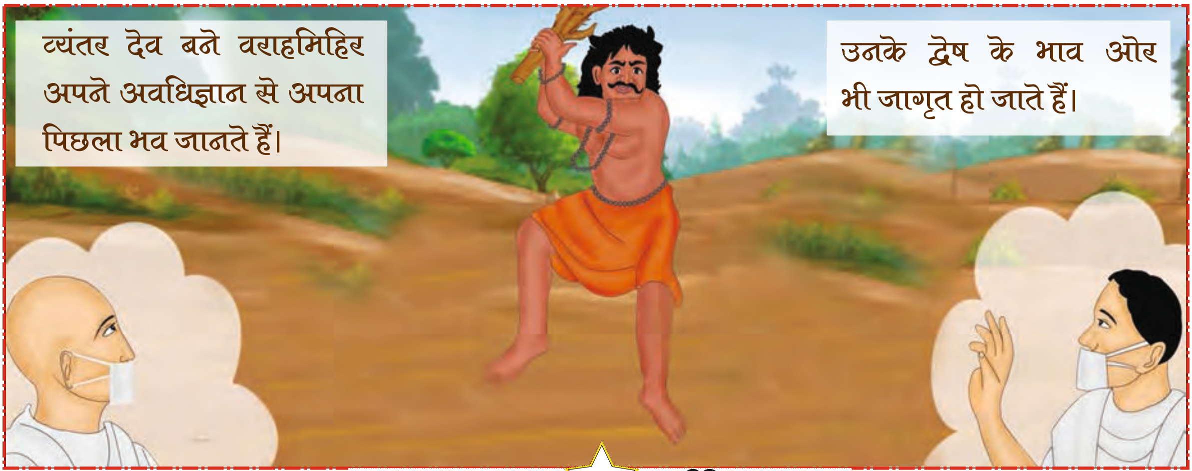
व्यंतर देव बने वराहमिहिर अपने अवधिज्ञान से अपना पिछला भव जानते हैं।
उनके द्वेष के भाव और भी जागृत हो जाते हैं।

भद्रबाहु स्वामी से अपने वैर का बदला लेने केलिए क्रोधित वराहमिहिर, पूरी नगरी में मरकी केरोग का उपसर्ग फेलाते हैं और सभी लोगों की मृत्यु होने लगती है।

सभी लोग आचार्य भगवंत के पास जाकर उपसर्ग की बात करते हैं।

आचार्य अपने ज्ञान से जानतें हैं कि यह दुष्कृत्य तो व्यंतर देव बने वराहमिहिर ने किया हैं।

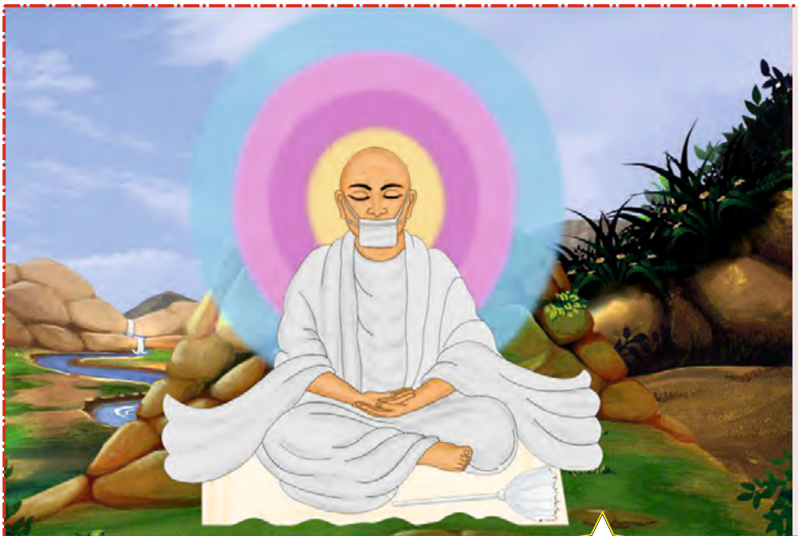

संघ पर आई विपत्ति को दूर करने के लिए आचार्य भद्रबाहु स्वामी अट्ठम तप की आराधना करके पार्श्वनाथ भगवान की स्तुति स्वरूप श्री उवसग्गहरं स्तोत्र की रचना करते हैं।

आचार्य श्री उवसग्गहरं स्तोत्र भक्तों को देते हैं। सभी नगरजन अब इस स्तोत्र का जाप करने लगे।

श्री उवसग्गहरं स्तोत्र के जाप करने से गाँव के लोग व्यंतर देव के उपसर्गों से मुक्त हो जाते है।

अर्थात इस स्तोत्र के नित्य -पठन से सभी उपसर्ग दूर हो जाते हैं। यह स्तोत्र महा मंगलकारी हैं।

***Vinay* induces Prosperity**

***Avinay* marks the beginning of downfall!**

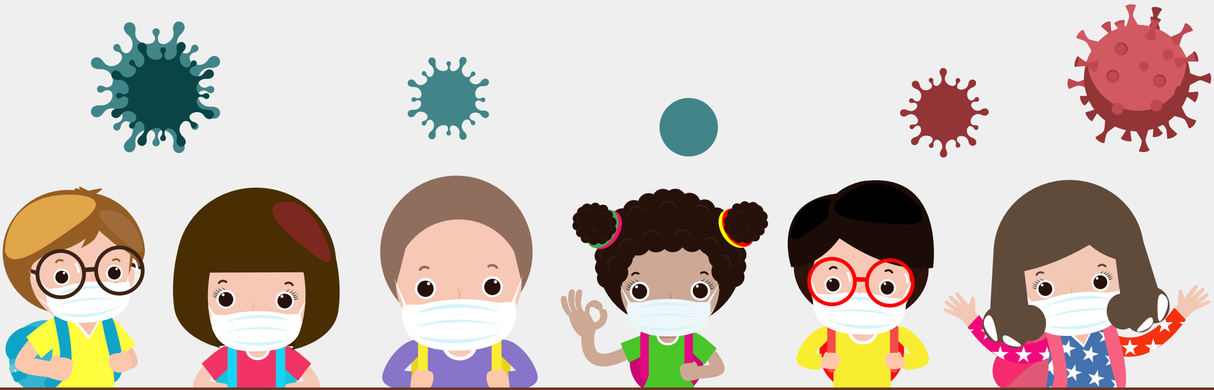

In this time of Pandemic, let us all chant
Maha Prabhavak Shree Uvassagahar Stotra
and over come all our obstacles!

Uvasaggaharam Pasam, Pasam Vandami Kammaghanamukkam,
Visahar Vis Ninnasam, Mangal Kallan Aavasam.... 1
Visahar Fullingamantam, Kanthhe Dharei Jo Saya Manuo,
Tassa Gah Rog Maree, Dutth Jara Janti Uvasamam.... 2
Chitthau Doore Manto, Tujaz Panamovi Bahu Falo Hoi,
Nar Tiriyesu Vi Jeeva, Pavanti Na Dukkha Do Gachcham.... 3
Tuh Sammate Laddhe, Chintamani Kappa Payavabbhahie,
Pavanti Avigghenam, Jiva Ayaramaram Thanam.... 4
Eeha Santhuo Mahayash, Bhattibbhar Nibbharen Hiyaena,
Ta Dev ! Dijja Bohim, Bhave Bhave Pas Jinchand.... 5.

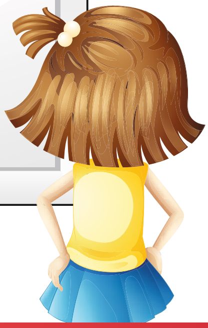

Let us Trace & Learn

Shree Uvasaggahar stotra

Uvasaggaharam Pasam, Pasam Vandami Kammaghanamukkam,
Visahar Vis Ninnasam, Mangal Kalan Aavasam... 1
Visahar Fulingamantam, Kanthhe Dharei Jo Saya Manuo,
Tassa Gah Rog Maree, Dutth Jara Janti Uvasamam... 2
Chitthau Doore Manto, Tujaz Panamovi Bahu Falo Hoi,
Nar Tiriyesu Vi Jeeva, Pavanti Na Dukkha Do Gachcham... 3
Tuh Sammate Laddhe, Chintamani Kappa Payavabbhahie,
Pavanti Avigghenam, Jiva Ayaramaram Thanam... 4
Eeha Santhuo Mahayash, Bhattibbhar Nibbharen Hiyaena,
Ta Dev ! Dijja Bohim, Bhave Bhave Pas Jinchand... 5.

(1) Uvasaggaharam Pasam, Pasam Vandami Kammaghanamukkam,
Visahar Vis Ninnasam, Mangal Kallan Aavasam.... 1

O Parshvanath parmatma! the remover of all troubles, I humbly bow to you, with utmost respect and faith in my heart. Just as you have freed your soul from all the Karmas (deeds), I too wish to attain such freedom. O Parmatma, while singing your praise and taking shelter at your feet, may my soul get rid of all the negative qualities like anger, pride, greed, lure, ego etc...

May I become as pure and prosperous as yourself !

(१) उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं,
विसहर विस निन्नासं, मंगल कल्लाण आवासं... १

हे उपसर्गना हरनारा पार्श्वनाथ परमात्मा, हुं आपने अत्यंत अहोभाव अने श्रध्धाथी वंदन करुं छुं. जेम आपे आपना आत्माने सर्व कर्मोथी मुक्त कर्यो छे, तेम मने पण आपना जेवी मुक्ति जोईए छे. हे परमात्मा, आपना शरणे समर्पित थई, आ स्तुति करतां करतां मारा आत्मामां रहेला क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष वगेरे अवगुणो दूर थाय अने...

मारो आत्मा पण आपना जेवो पावन अने प्रभावक बने.

2) Visahar Fullingamantam, Kanthhe Dharei Jo Saya Manuo,
Tassa Gah Rog Maree, Dutth Jara Janti Uvasamam.... 2

The "Vishahar Mantra" - the most illuminating & the destroyer of poison is included in this Uvasaggahar stotra. The one who chants this stotra (hymn) constantly and regularly, will be able to reduce his sins and faulty desires. He will be protected from various diseases, planetary effects and evil effects of black magic. One who recites this hymn repeatedly, will get rid of impure nature, evil thoughts and ill - feeling. He will become positive, peaceful and will be able to attain Moksh!

(२) विसहर फुल्लिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ,
तस्स गह रोग मारी, दुट्ठ जराजंति उवसामं... २

विषने हरनारो ज्योति स्वरूप विषहर मंत्र आ स्तोत्रमां समायेलो छे. जे व्यक्ति आ स्तोत्रनुं सतत स्मरण करे छे... निरंतर जाप करे छे तेना बधां पापो दूर थई जाय छे... तेना कषायो मंद पडी जाय छे. तेना बधां रोगो, ग्रहोना नडतर अने दुष्ट विद्याथी थतां प्रयोगो निष्फळ थई जाय छे. जे व्यक्ति परमात्मा पार्श्वनाथने समर्पित थई नित्य स्मरण करे छे तेनां दुष्ट अने मलिन विचारो, तेनी खराब वृत्तिओ अने खराब भावनाओ शांत थई जाय छे. ते व्यक्ति शांत अने पोझीटीव बनी जाय छे... अने मोक्षने प्राप्त करी शके छे.

(3) Chitthau Doore Manto, Tujaz Panamovi Bahu Falo Hoi,
Nar Tiriyesu Vi Jeeva, Pavanti Na Dukkha Do Gachcham.... 3

O Parmatma! whether or not I know this hymn, whether or not I recite it correctly... it is all a secondary matter. But bowing to you respectfully itself, is greatly beneficial. It helps me to attain peace and happiness in life. And this benefit is not just restricted to human beings. All the living beings, birds & animals in this world would attain happiness by respectfully saluting and bowing to you. It frees everyone from all types of sorrows!

(३) चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामोवि बहु फलो होई,
नर तिरियेसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख दोगच्चं... ३

हे परमात्मा, मने आपनी आ स्तुति आवडे के न आवडे... मने ऐना शुध्ध उच्चार आवडे के न आवडे... ऐ बधी तो दूरनी वात छे. पण, आपने भावपूर्वक करेला वंदन पण महाफल आपे छ, सुख अने शांति आपनारा छे. परमात्मानी आ स्तुति पर मात्र मनुष्योनो ज अधिकार नथी. आ सृष्टिना सर्व जीवो, पशुओ, पक्षीओ जे आपने भावथी वंदन करे छे... ते बधांना पण दुख दूर थाय छे.

(4) Tuh Sammate Laddhe, Chintamani Kappa Payavabbhahie,
Pavanti Avigghenam, Jiva Ayaramaram Thanam.... 4

O Parshvanath Parmatma! while singing your praise, I gain eligibility to attain Moksh. Parmatma, you and your hymn of praise are as precious as the Chintamani jewel and the wish - granting tree. Just as a person who possesses this gem or stands under this tree gets whatever he desires, I too obtain everything by singing your praise. When a person chants your hymn of praise repeatedly, he never confronts any hurdle in any path of his life. Rather, he quickly attains Moksh with utmost ease !

(४) तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि कप्पपायवब्भहिऐ,
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामंर ठाणं... ४

हे परमात्मा पार्श्वनाथ, आपनी स्तुति करतां करतां मने मोक्षमां जवानी पात्रता मळी जाय छे. हे परमात्मा, आप अने आपनी स्तुति रत्नचिंतामणि अने कल्पवृक्ष समान छे. जेम जेनी पासे आ रत्नचिंतामणि होय अने जे आ कल्पवृक्षनी नीचे उभा रही, जे इच्छा करे ते तेने मळे छे तेम आपनी स्तुति करनारने पण जगतनी सर्व वस्तुओ प्राप्त थई जाय छे. जे व्यक्तिनां कंठे परमात्मानी आ स्तुतिनुं स्मरण सदाय होय तेना जीवनमां क्यारेय कोई विघ्न के मुश्केली आवती नथी अने सरळताथी मोक्ष प्राप्त करी शके छे.

(5) Eeha Santhuo Mahayash, Bhattibbhar Nibbharen Hiyaena, Ta Dev ! Dijja Bohim, Bhave Bhave Pas Jinchand.... 5.

O Parmatma, with full devotion in my heart, I sing this hymn of praise, which is extremely powerful and effective. Parmatma, this little child of yours is ignorant and doesn't understand much. But I have only one humble request to you in all my births, may I have the fortune of being a Jain and have an inclination towards practicing Jainism. I don't want anything else. "O Parshva Jinachanda, at last I wish - I pray "just as the sea- waves dance with joy on seeing the moon, may my heart experience the same waves of devotion whenever I see you... I remember you....!"

(५) इअ संथुओ महायश, भत्तिब्भर निब्भरेण हियअेणं, ता देव, दिज्ज बोहिं,भवे भवे पास जिणचंद...५

हे परमात्मा, भक्ति भरेलां पूर्ण हृदय वडे, महायशस्वी ऐवी आपनी आ स्तुतिनुं हुं स्मरण करुं छुं. हे परमात्मा, आपनो अबुध अने अज्ञानी बाळक छुं. मने वधारे कंई समज नथी. पण, मारी आपने विनयपूर्वक एक ज विनंति छे... मने भवोभव आपनो धर्म अने धर्म प्रत्येनी रूचि मळजो... मने बीजुं कांइ नथी जोतुं. हे पार्श्व जिणचंद्र, जेम चंद्रने जोईने सागरमां भरतीनो घुघवाट थाय छे, तेम मारा हृदयमां पण आपने जोईने... आपनुं स्मरण करतां करतां भक्तिनो घुघवाट थाय... ऐ ज भावना छे... ऐ ज मारी प्रार्थना छे.

Activity: Let us fill colours of Devotion

(page for colouring)

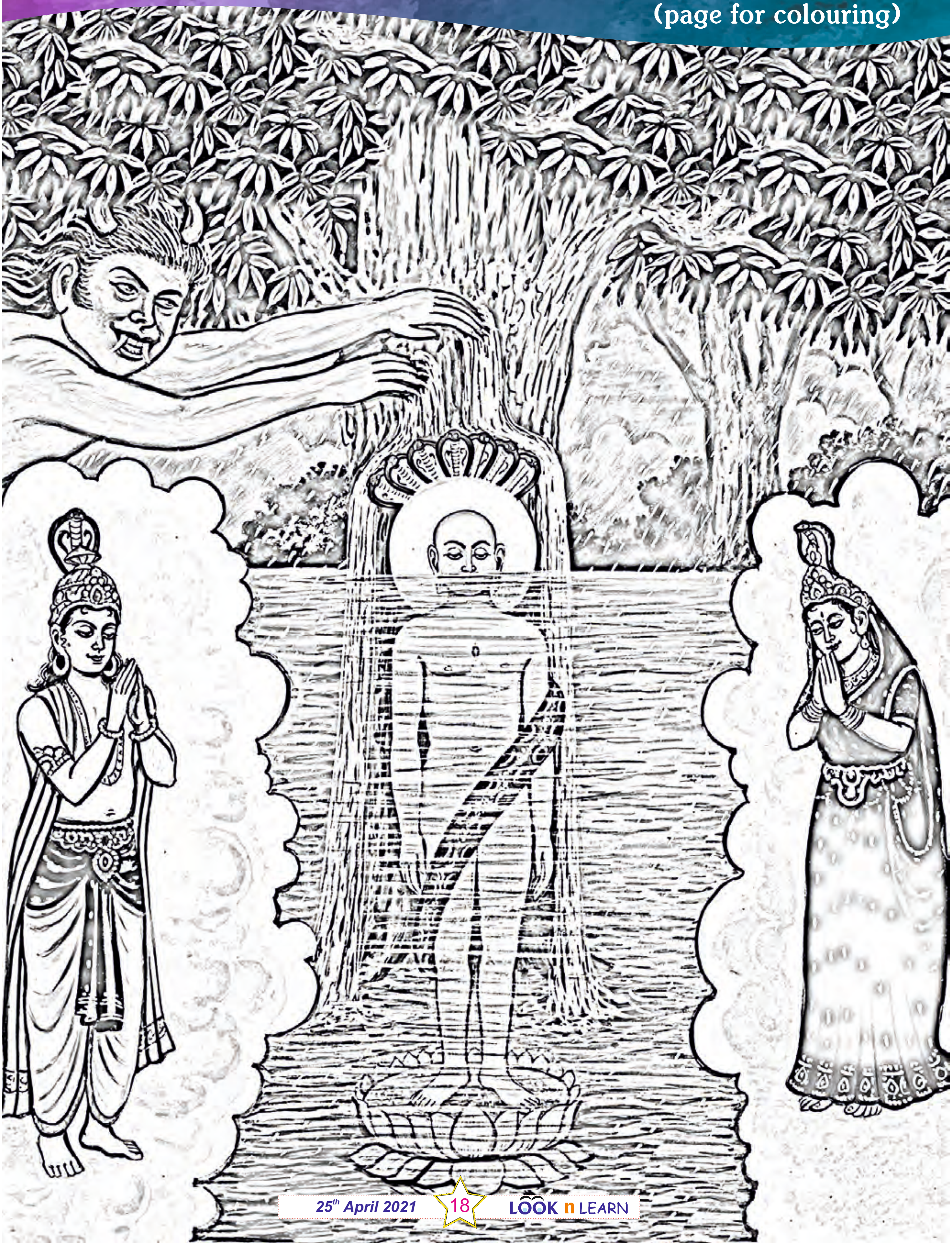

Benefits of chanting shree Uvasaggahar Stotra

"It removes all our obstacles and hence it is known as "Obstacle Remover""

It eliminates our worries

आपणी चिंता अने
दुखो दूर थाय छे

It removes our negativity and makes us positive

आपणी नेगेटीवीटी दूर
थाय छे अने पोझीटीव
बनावे छे

It purifies our soul

आपणा आत्माने
शुध्ध करे छे

It converts our Luck into Good Luck

आपणां Luck ने
Good Luck बनावे छे

It gives us peace, pleasure & prosperity

आपणने सुख, शांति
अने समृध्धि मळे छे

It melts our ego

आपणां अहम्‌ने
ओगाळे छे

Respect and Love for Parmatma increases

परमात्मा प्रत्ये आदर
अने अहोभाव वधे छे

It destroys bad Karmas

अशुभ कर्मोनो
नाश थाय छे

- Gurubhakt Mehta Parivar

Registered with Registrar of Newspapers under RNI No. MAH MUL/2011/40056
Vol.: 12, Issue: 06, Date:.25.04.2021, Postal Registration No. MNE/171/2021-23.
Date of Posting / Date of Publication 10th & 25th of every month.
License to post without prepayment, WPP license No. MR/Tech/WPP-273/NE/2021-23.
Look N Learn - Posted at Mumbai patrika channel sorting office Mumbai -1

Let's make Mantra our friend

Let us pray for the wellness of the whole universe,
Chant day and night to overcome obstacles

Shubh Thao aa Sakal Vishwanu, Shubh Thao aa Sakal Vishwanu, Shubh Thao aa Sakal Vishwanu, Shubh Thao aa Sakal Vishwanu,

Shubh Thao aa Sakal Vishwanu, Shubh Thao aa Sakal Vishwanu, Shubh Thao aa Sakal Vishwanu,

Publisher, Printer and Owner Ashok R. Sheth, Printed at : Accurate Graphics Pvt. Ltd.,
15-A, Samrat Mill Compound, L.B.S Marg, Vikhroli (W), Mumbai - 400 079.
Publish at Mumbai : 20, Vanik Nivas, Kama Lane, Ghatkopar (W), Mumbai - 86. Editor : Ashok R. Sheth